Problem :— शोध समस्या का अर्थ वह प्रश्न है, जिसका कोई तात्कालिक उत्तर न हो।

(Townsend 1953) "सामान्यतः समस्या वह प्रश्न है, जिसका कोई उपलब्ध उत्तर नहीं होता है।"

(Kerlinger 1964, 1986) "समस्या वह प्रश्नवाचक वाक्य या कथन है, जो यह पूछता है, कि दो या दो से अधिक चरों के बीच किस तरह का संबंध है।"

(Reber (1987) "समस्या मूलतः वह परिस्थिति है, जिसमें कुछ घटक ज्ञात होते हैं, और अतिरिक्त घटकों का निर्धारण आवश्यक है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से शोध समस्या का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है, इनकी विशेषताएँ निम्न हैं :—

(i) समस्या कथन की अभिव्यक्ति प्रश्नात्मक वाक्य द्वारा होती है।

(ii) शोध कथन द्वारा दो या दो से अधिक चरों के बीच संबंध की अभिव्यक्ति होती है। अर्थात शोध समस्या के कथन की अभिव्यक्ति करने से पहले शोधकर्ता को चरों के बारे में एक निर्णय ले लेना पड़ता है।

(iii) शोध समस्या का कथन ऐसा होना चाहिए कि उसके चरों की माप आँकड़ों का संग्रह करना संभव किया जा सके।

(iv) किसी शोध समस्या को नैतिक मूल्यों से या निर्णयों से संबंधित नहीं होना चाहिए क्योंकि ऐसी शोध समस्याओं का अध्ययन करना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है।

(v) शोध समस्या का संबंध महत्वपूर्ण विषय या घटनाओं से होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

(vi) समस्या को न तो अधिक सामान्य न ही अधिक विशिष्ट होना चाहिए। (Kerlinger 1986) "शायद अत्यधिक विशिष्टता अत्यधिक सामान्यता से भी बड़ा खतरा है।"

उपयुक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि शोध समस्या एक प्रश्नवाचक कथन के रूप में व्यक्त की जाती है।

Importance of Problem :— शोध के लिए एक समस्या या प्रश्न का होना आवश्यक है। शोधकार्य का आरंभ तभी होता है, जबकि शोधकर्ता के सामने कोई समस्या होती है। इसीलिए समस्या के चयन को शोध प्रक्रिया का पहला चरण माना जाता है। शोधकर्ता सबसे पहले किसी समस्या का चयन करता है, और उसके बाद शोधकार्य आरंभ करता है। शोध की सफलता समस्या की अनुकूलता एवं उपयोगिता पर निर्भर करती है। अनुकूलता का अर्थ यह है, कि समस्या ऐसी हो जिसका समाधान सहज रूप से किया जा सके। उपयोगिता का अर्थ यह है, कि समस्या ऐसी हो, जिसके समाधान से व्यक्ति, समाज, राष्ट्र तथा संपूर्ण मानव जीवन लाभान्वित हो सके। सफल शोध के लिए समस्या के महत्व की चर्चा करते हुए (Mc Guigan 1969) ने कहा है, कि— "अनुकूल तथा उपयोगी समस्या के चयन हो जाने पर शोधकार्य बहुत आसान बन जाता है।"

2.) परिकल्पना को सकारात्मक कथन होना चाहिए :-

परिकल्पना हमेशा सकारात्मक कथन के रूप में होती है, नकारात्मक रूप में नहीं। यहां हाँ या हाँ से अधिक चरों के बीच संबंध को स्वीकार किया जाता है, अस्वीकार नहीं किया जाता।

3.) परिकल्पना को समस्या से संबद्ध होना चाहिए :-

एक वैज्ञानिक परिकल्पना वह कथन है, जो शोध समस्या से संबद्ध होता है। अच्छी परिकल्पना वास्तव में शोध समस्या का काम-चलाऊ उत्तर होता है। McGuigan 1969) ने भी कहा है " परिकल्पना को समस्या का संगत उत्तर होना चाहिए।"

4.) परिकल्पना को अल्पव्ययी होना चाहिए :-

एक अच्छी परिकल्पना में अल्पव्ययिता का गुण होना चाहिए। किसी समस्या से संबंधित अल्पव्ययी तथा अधिव्ययी परिकल्पनाएँ उपलब्ध हों तो अल्पव्ययी को श्रेष्ठ समझना चाहिए।

5.) परिकल्पना को जांचनीय होना चाहिए :-

एक अच्छी प्राकल्पना की पहचान यह है, कि उसका प्रतिपादन इस ढंग से किया जाय कि इसकी जांच करने के बाद यह निश्चित रूप से कहा जा सके कि वह संभवतः सही है या गलत।

6.) प्राकल्पना में तार्किक पूर्णता तथा व्यापकता होना चाहिए

शोधों में कुछ प्राकल्पना तो ऐसे होते हैं जिनसे शोध समस्या का एक पर्याप्त उत्तर सीधे मिल जाता है

Problem :— शोध समस्या का अर्थ वह प्रश्न है, जिसका कोई तात्कालिक उत्तर न हो।

(Townsend 1953) "सामान्यतः समस्या वह प्रश्न है, जिसका कोई उपलब्ध उत्तर नहीं होता है।"

(Kerlinger 1964, 1966) "समस्या वह प्रश्नवाचक वाक्य या कथन है, जो यह पूछता है कि दो या दो से अधिक चरों के बीच किस तरह का संबंध है।"

(Raber (1987) "समस्या मूलतः वह परिस्थिति है, जिसमें कुछ घटक ज्ञात होते हैं, और अतिरिक्त घटकों का निर्धारण आवश्यक है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से शोध समस्या का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है, इनकी विशेषताएँ निम्न हैं :—

(i) समस्या कथन की अभिव्यक्ति प्रश्नात्मक वाक्य द्वारा होती है।

(ii) शोध कथन द्वारा दो या दो से अधिक चरों के बीच संबंध की अभिव्यक्ति होती है। अर्थात शोध समस्या के कथन की अभिव्यक्ति करने से पहले शोधकर्ता को चरों के बारे में एक निर्णय ले लेना पड़ता है।

(iii) शोध समस्या का कथन ऐसा होना चाहिए कि इसके चरों की माप आँकड़ों का संग्रह करना संभव किया जा सके।

(iv) किसी शोध समस्या को नैतिक मूल्यों से या निर्णयों से संबंधित नहीं होना चाहिए क्योंकि ऐसी शोध समस्याओं का अध्ययन करना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है।

(v) शोध समस्या को संबंध महत्वपूर्ण विषय या घटनाओं से होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

7:09:05
Salini Mam WhatsApp
3 minutes ago

10.) ज्ञान में रिक्ति :- परिकल्पना के निर्माण में यह (उपेक्षित क्षेत्र) स्रोत सामान्य रूप में सहायक होता है। भिन्न-भिन्न स्रोतों से जिस क्षेत्र में ज्ञान-रिक्ति नजर आती है, शोधकर्ता उसी से संबंधित परिकल्पना बना लेता है।

11.) विरोधी परिणाम :- परिकल्पना के निर्माण का आधार किसी विषय के संबंध में विभिन्न शोधकर्ता के विरोधी परिणाम है। नया शोधकर्ता या अनुसंधानकर्ता विरोधी परिणामों को ध्यान में रखते हुए किसी निश्चित परिणाम पाने के लिए अनुकूल परिकल्पना की रचना कर सकता है।

12.) विशेषज्ञ के विचार एवं निर्देशन :- परिकल्पना की रचना का यह सबसे उपयोगी व्यवहारिक स्रोत है। शोधकर्ता जिस क्षेत्र में शोध करना चाहता है, वह उस क्षेत्र के अनुभवी तथा प्रशिक्षित विद्वानों से सम्पर्क स्थापित करता है, और उनके द्वारा दिए गए सुझावों तथा सलाहों के आधार पर समुचित परिकल्पना की रचना करता है।

इस प्रकार स्पष्ट है, कि परिकल्पना की रचना, निर्धारण या प्रतिपादन के उपर्युक्त कई आधार या स्रोत हैं।

Qualities of Good Hypothesis :-

(i) परिकल्पना को अनुमानात्मक होना चाहिए :-

एक अच्छी वैज्ञानिक परिकल्पना हमेशा कथन के रूप में होती है (Kerlinger 1986) ने स्पष्ट शब्दों में कहा है, कि परिकल्पना प्रश्न के रूप में नहीं बल्कि कथन के रूप में होती है

Scanned with CamScanner

(iii) प्राकल्पना द्वारा पदों के बीच एक सामान्य या विशिष्ट संबंधों की अभिव्यक्ति की जाती है।

Sources of Hypothesis :-

1.) व्यक्तिगत अनुभव :- परिकल्पना के निर्माण का एक आधार शोधकर्ता का व्यक्तिगत अनुभव है। शोधकर्ता सामान्य घटना को भी विशिष्ट दृष्टि से देखता है। उसे उस घटना में कोई नई बात सूझ जाती है, और वह उसके आलोक में किसी परिकल्पना का निर्माण कर लेता है।

2.) पहले के शोध :- परिकल्पना के निर्माण का एक मुख्य स्रोत पूर्व के अनुसंधान है। पूर्व के सूचनाओं के आधार पर वह परिकल्पना का निर्माण करता है। व्यवहारिक दृष्टिकोण से यह स्रोत काफी उपयोगी है।

3.) शोध-सार :- शोध सार का तात्पर्य पहले किए गए शोधों के सारांश एवं निष्कर्ष से है। भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में प्रति वर्ष किए गए अनुसंधान के सारांश एवं निष्कर्ष को संक्षेप में एक ही साथ प्रकाशित कर दिया जाता है, जो शोध संस्थानों में उपलब्ध होते हैं। नए शोधकर्ता इन्हीं के आधार पर पूर्वकल्पना का निर्माण करते हैं।

4.) शोध-पत्रिकाएँ :- परिकल्पना के निर्माण में शोध-पत्रिका से भी मदद मिलती है। इन पत्रिकाओं में वर्तमान अनुसंधान तथा शोधों को संक्षेप में प्रकाशित कर दिया जाता है। जिनसे शोधकर्ता को अध्ययन व पूर्वकल्पना में सुविधा प्रदान करती है।

Scanned with CamScanner

क्योंकि वह तार्किक रूप से व्यापक तथा पूर्ण होता है परन्तु कुछ प्राकल्पनाओं में यह गुण नहीं होता। ऐसी परिस्थिति में हम ऐसी अपूर्ण प्राकल्पना की जगह पहले की तरह की प्राकल्पना का ही चयन करते हैं।

7). परिकल्पना को परीक्षणीय होना चाहिए :—

एक वैज्ञानिक परिकल्पना में परीक्षणीयता का गुण होना न केवल आवश्यक है बल्कि अनिवार्य भी। इसका अर्थ यह है कि परिकल्पना ऐसी हो जिसकी जाँच अनुभाविक अध्ययन के आधार पर करना संभव हो जैसे : "परिणाम का ज्ञान होने से निष्पादन में उन्नति होती है।"

8.) अध्ययन किए जाने वाले क्षेत्र की अन्य परिकल्पनाओं का बनाई गई परिकल्पना के साथ तालमेल होना चाहिए :—

यदि शोधकर्ता द्वारा तैयार की गई प्राकल्पना क्षेत्र की अन्य प्राकल्पनाओं के अनुकूल है, तो इसे एक अच्छी प्राकल्पना समझा जाता है। हालांकि इस ढंग की अनुकूलता कोई आवश्यक नहीं है, परन्तु यदि प्राकल्पना क्षेत्र के अन्य ज्ञानों एवं परिकल्पनाओं के विरोधी न हो कर उनके अनुकूल है तो भी उसे अच्छी परिकल्पना माना जायेगा।

9.) प्राकल्पना को प्राप्त वैज्ञानिक परीक्षणों एवं उपकरणों से संबंधित होना चाहिए। :—

एक अच्छी शोध प्राकल्पना को क्षेत्र में उपलब्ध वैज्ञानिक परीक्षणों से संबंधित होना आवश्यक है। दूसरे शब्दों में प्राकल्पना में प्रस्तावित चर ऐसे हों जिनके मापने के लिए मनो० के पास साधन उपलब्ध हों।

(CHA: 2)

Hypothesis

What is Hypothesis :- वास्तविक अध्ययन आरंभ करने के पहले शोधकर्ता अनुमान लगाता है कि अध्ययन के बाद किस तरह का परिणाम मिलेगा। साधारण अर्थ में इसी अनुमान को परिकल्पना कहते है। किसी शोध समस्या का एक प्रस्तावित जांचनीय उत्तर ही प्राक्कल्पना कहलाता है।

परिकल्पना को कुछ प्रमुख शोध विशेषज्ञों ने इस प्रकार परिभाषित किया है :-

(Kerlinger 1986) "परिकल्पना दो या दो से अधिक चरों के बीच सम्बन्ध का अनुमानात्मक कथन है"

(Mc Guigan 1990) "दो या दो से अधिक चरों के बीच संभावित संबंधों के बारे में बनाए गए जांचनीय कथन को प्राक्कल्पना कहा जाता है"।

(Chaplin 1975) "परिकल्पना एक अभिधारणा है, जो अंतरिम व्याख्या का काम करती है दूसरे दृष्टिकोण से परिकल्पना एक प्रश्न है, जिसका उत्तर प्रयोग या निरीक्षणों की शृंखला द्वारा दिया जाता है"

(Reber 1987) "परिकल्पना वह कथन, प्रस्ताव या अभिधारणा है जो कुछ तथ्यों की अंतरिम व्याख्या का काम करती है"

इन परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर हमें कुछ ऐसे तथ्य प्राप्त होते हैं :-

(i) प्राक्कल्पना में दो या दो से अधिक चरों के बीच एक संबंध बताया जाता है।

(ii) प्राक्कल्पना चरों के बीच एक जांचनीय कथन के रूप में अभिव्यक्त की जाती है

5.) संगत पुस्तकें :-

6.) संगत सिद्धांत :- परिकल्पना के प्रतिपादन में संगत सिद्धांतों के अध्ययन से भी मदद मिलती है। अनुसंधानकर्ता जिस विषय पर शोध करना चाहता है, उस विषय पर उपलब्ध सिद्धांतों का अध्ययन करना चाहता है, जो उनसे सूचनाएं प्राप्त होती हैं, उनके आधार पर परिकल्पना का निर्माण करता है।

7.) अनुरूपता :- कुछ विशेष परिस्थितियों में अनुरूपता तर्क के आधार पर परिकल्पना का प्रतिपादन किया जाता है। इन वस्तुओं या प्राणियों की समानता के आधार पर परिकल्पना बनाई जा सकती है जैसे : "मनुष्य स्पंदन तथा ऊर्जा के आधार पर जीवित है।"

8.) सांस्कृतिक घटक - विश्लेषण :- परिकल्पना की रचना में भिन्न-2 संस्कृतियों के साहित्यों के घटकों के विश्लेषण से काफी मदद मिलती है। शोधकर्ता किसी संस्कृति के साहित्यों के घटकों का विश्लेषण करता है, और इस तरह जो तथ्य प्राप्त होते हैं, उनके आलोक में परिकल्पना की रचना करता है। (Mc Clelland 1955) ने कई संस्कृतियों का अध्ययन करके परिकल्पना बनाई कि "जिस संस्कृति में बच्चों को स्वतंत्रता - प्रशिक्षण दिया जाता है, वहां के बच्चों में उपलब्धि प्रेरक प्रबल होता है।"

9.) व्यक्तिगत रूची एवं सामर्थ्य :- परिकल्पना की रचना में शोधकर्ता की अपनी रूचि तथा सामर्थ्य भी काफी सहायक होती है। शोधकर्ता उसी विषय में समस्या ढूंढता है, और परिकल्पना की रचना करता है, जिस विषय में उसकी व्यक्तिगत रूची होती है। वह उस विषय में जितना ही अधिक दक्ष तथा समर्थ होता है, उतना ही जल्दी परिकल्पना के निर्माण में सफल होता है।